गुप्तकालीन अभिलेख
Dr. Kamlesh Kumar (AIH) SNSRKS College, Saharsa

गुप्त अभिलेखों में सबसे महत्वपूर्ण समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति है। यह लेख कौशाम्बी में स्थित मौर्य सम्राट अशोक के शिलास्तम्भ के निचले भाग में खुदा है। वर्तमान समय में यह स्तम्भ इलाहाबाद के किले में स्थित है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण थे। इसमें समुद्रगुप्त के जीवन की घटनाओं का वर्णन है। इसी अभिलेख से उसके दिग्विजय की भी जानकारी प्राप्त होती है। इसी लेख में प्रथम गुप्त शासक श्रीगुप्त से लेकर ~~समुद्रगुप्त~~ समुद्रगुप्त के राज्याभिषेक दिग्विजय यह सब उसके व्यक्तित्व पर विशद प्रकाश पड़ता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि से मिला गुहालेख से उसकी दिग्विजय की बारे में सूचना प्राप्त होती है। इस समय कुमारगुप्त प्रथम के लेखक उत्तरी बंगाल से मिलते हैं जो इस बात के ~~सूचक~~ सूचक कराते हैं कि इस समय तक सम्पूर्ण बंगाल का भाग गुप्तों के अधिकार में आ गया थी। स्कन्दगुप्त के भितरी स्तम्भलेख से हूण आक्रमण के बारे में यह सूचना मिलती है। इसी सम्राट के जूनागढ़ से प्राप्त अभिलेख से हमें इसके बारे में यह पता चलता है कि उसने इतिहास प्रसिद्ध सुदर्शन झील का ~~पुन~~ पुनर्निर्माण करवाया थी इसके अलावा और भी अनेक प्रकार के अभिलेख एवं दानपत्र मिले हैं जिससे हमें यह पता चलता है कि गुप्त काल की अनेक महत्वपूर्ण बातों की जानकारी होती है। इन सभी अभिलेखों की भाषा विशुद्ध संस्कृत में दी गई है तथा इनमें दी गयी तिथियाँ गुप्तसंवत् की है। इतिहास के साथ साहित्य की दृष्टि से भी गुप्त अभिलेखों का विशेष महत्व होता है। इसे संस्कृत भाषा और साहित्य के पर्याप्त विकसित होने के बारे में प्रमाण मिलता है। हरिषेण द्वारा विरचित प्रयाग प्रशस्ति तो वस्तुतः एक प्रकार का चम्पू-काव्य ही है।